प्रातः क्लास 23/12/68 ओम शान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओम शान्ति। यह किसने कहा ? आत्मा ने। अविनाशी आत्मा ने कहा शरीर द्वारा। शरीर और आत्मा में कितना फर्क है। शरीर 5 तत्व का इतना बड़ा पुतला बन जाता है। भल छोटा है; परन्तु फिर भी आत्मा से तो बड़ा जरूर है। पहले तो एकदम छोटा जैसे पिन्डी होती है। जब थोड़ा बड़ा होता है तो आत्मा प्रवेश करती है। बड़ा होते2 फिर इतना बड़ा हो जाता है। आत्मा तो चैतन्य है ना। जब तक आत्मा प्रवेश न करे तब तक पुतला कोई काम का नहीं रहता। कितना फर्क है। बोलने वाली भी तो आत्मा ही है। वह इतनी छोटी सी बिन्दी है। वह कब छोटी बड़ी नहीं होती। विनाश को नहीं पाती। अभी परम आत्मा बाप ने समझाया है कि मैं अविनाशी हूँ और यह शरीर विनाशी है। इनमें मैं प्रवेश कर पार्ट बजाता हूँ। यह बातें तुम अभी चिन्तन में लाते हो। आगे तुम न आत्मा को जानते थे न परमात्मा को जानते थे। सिर्फ कहने मात्र कहते थे यह परमपिता परमात्मा। आत्मा भी समझते थे; परन्तु फिर कोई ने कह दिया तुम परमात्मा हो। किसने यह बतलाया? इन भक्तिमार्ग के गुरुओं और शास्त्रों ने। सतयुग में तो ऐसे कोई बतलावेंगे नहीं। अभी बाप ने समझाया है तुम मेरे बच्चे हो। आत्मा नेचरल है, शरीर अननेचरल है मिट्टी का बना हुआ है। आत्मा तो सदैव अविनाशी है। कब विनाश नहीं छोटा बड़ा नहीं होता। शरीर तो छोटा बड़ा होता है ना। जब आत्मा इनमें है तो बोलती–चालती है। अभी तुम बच्चे जानते हो हम आत्माओं को बाप आकर समझाते हैं। निराकार शिवबाबा इस संगमयुग पर ही इस शरीर द्वारा आकर सुनाते हैं। यह आँखें तो शरीर में रहती ही हैं। अभी बाप ज्ञान का चक्षु देते हैं। आत्मा में ज्ञान है नहीं तो अज्ञान चक्षु है। बाप आते हैं तो आत्मा को ज्ञान की चक्षु मिलती है। आत्मा ही सभी कुछ करती है। आत्मा कर्म करती है शरीर द्वारा। अभी तुम समझते हो बाप ने भी यह शरीर धारण किया है। अपना भी राज़ बताते हैं, सृष्टि के आदि–मध्य–अन्त का भी राज़ बताते हैं। सारी नाटक का नालेज देते हैं। आगे तुमको कुछ भी पता नहीं था। हाँ, नाटक जरूर है, सृष्टि का चक्र फिरता है; परन्तु कैसे फिरता है यह कोई नहीं जानते। रचयिता और रचना के आदि–मध्य–अन्त का ज्ञान अभी तुमको मिलता है। बाकी तो सभी ठहरे भक्त। बाप ही आकर तुमको ज्ञानी तु आत्मा बनाते हैं। आगे तुम भक्त तु आत्मा थे। तु आत्मा भक्ति करते थे। अभी तु आत्मा ज्ञान सुनते हो। भक्ति को कहा जाता है अंधियारा। भक्ति से तुम पतित होते हो। ऐसे नहीं कहेंगे भक्ति से भगवान मिलता है। बाप ने समझाया है भक्ति का पार्ट है। ज्ञान का भी पार्ट है। तुम जानते (हो) हम भक्त थे, तो कोई सुख न था। भक्ति करते धक्का खाते रहते थे। बाप को ढूँढते थे। अभी समझते हैं यह (य)ज्ञ–तप, दान–पुण्य आदि जो कुछ भी करते थे, ढूँढते–2 धक्का खाते–2 तंग हो जाते, तमोप्रधान बन जाते हैं। क्योंकि गिरना होता है ना, झूठे काम करना, छी–छी होना होता है। पतित भी बन गये। ऐसे नहीं कि पावन होने लिये भक्ति करते थे। भगवान से मिलने लिये कोशिश करते थे। रड़ी मारते थे हे! भगवान आकर के पावन बनाओ। आत्मा समझती है पावन बनने बिगर हम पावन दुनियाँ में जा नहीं सकेंगे। यह नहीं समझते हैं कि पावन बनने बिगर भगवान से नहीं मिल सकते। भगवान को तो कहते हैं कि आकर पावन बनाओ। (प)तित ही भगवान से मिलते हैं पावन होने लिये। पावन से तो भगवान मिलता ही नहीं। सतयुग में थोड़े ही .... (ल0ना0) से भगवान मिलता है। भगवान आकर के तुम पतितों को पावन बनाते हैं और फिर तुम यह शरीर छोड़ देते हो। पावन तो इस तमोप्रधान सृष्टि में रह न सके। बाप तुमको पावन बनाकर गुम हो जाते ...। उनका पार्ट ही ड्रामा में वन्डरफुल है। जैसे आत्मा देखने में नहीं आती है, भल सा0 हो तो भी समझ न ..... और तो सभी को समझ सकते हैं यह फलाना है, यह फलाना है। याद करते हैं, चाहते हैं फलाने का चैतन्य में सा0 हो और तो कोई मतलब नहीं। अच्छा, चैतन्य में देखते हो फिर क्या? सा0 हुआ–फिर तो गुम (हो) जावेगा। अल्पकाल क्षणभंगुर सुख की आस पूरी होगी। इसको कहा जाता है अल्पकाल क्षणभंगुर सुख। सा0 की चाहना थी वह मिला, बस। यहां तो मूल बात है पतित से पावन बनने की। पावन बनेंगे तो देवता बन जावेंगे

अर्थात् स्वर्ग में चले जावेंगे। स्वर्ग में तो कोई जा न सके। जब तक समय न आये। शास्त्रों में तो लाखों वर्ष लिख दिया है। समझते हैं कलियुग में अजुन 40 हजार वर्ष पड़े हैं। बाबा तो समझाते हैं सारा कल्प ही 5000 वर्ष का है। तो मनुष्य अंधियारे में हैं ना। इसको कहा जाता है घोर–अंधियारा। कोई में ज्ञान है नहीं। वह सभी है भक्ति। रावण जबसे आता है तो भक्ति भी उनके साथ है और जब बाप आते हैं तो उनके साथ ज्ञान है। बाप से एक ही बार ज्ञान का वरसा मिलता है। घड़ी2 नहीं मिल सकता। वहां तो तुम कोई को ज्ञान देते नहीं हो। दरकार ही नहीं। ज्ञान उनको मिलता है तो अज्ञान में हैं। बाप को कोई भी जानते नहीं। बाप को गाली देने बिगर कोई बात ही नहीं करते। यह भी तुम अभी समझते हो। दुर्गति में डालने लिये कितना माथा मारते हैं। गालियाँ देने, डिफेम करने कितना जोर देते हैं। तुम कहते हो ईश्वर सर्वव्यापी नहीं है। वह हम सभी आत्माओं का बाप है और वह कहते हैं कि मैं ठिक्कर–भित्तर में नहीं हूँ। तुम बच्चों ने अभी अच्छी तरह से समझा है। भक्ति बिल्कुल अलग चीज़ है। उनमें ज़रा भी ज्ञान नहीं होता। समय ही सारा बदल जाता है। ज्ञान का भी नाम बदल जाता, फिर मनुष्यों का भी नाम बदल जाता है। पहले कहा जाता है देवताएँ। फिर क्षत्रिय। फिर वैश्य शूद्र। वह हैं दैवीगुणों वाले मनुष्य और यह हैं आसुरी गुणों वाले मनुष्य। बिल्कुल ही छी–छी हैं। गुरुनानक ने भी कहा है असंख्य चोर..... मनुष्य कोई ऐसा कहे तो उनको झट कहे यह क्या तुम गाली देते हो; परन्तु बाप कहते हैं यह सभी हैं आसुरी सम्प्रदाय। तुमको क्लीयर कर समझाते हैं। वह रावण सम्प्रदाय वह राम सम्प्रदाय। गाँधी भी कहते थे हमको राम राज्य चाहिए। यह नहीं समझते हैं हम पतित हैं। कुछ भी नहीं। अभी तुम देखते हो रावण राज्य में क्या2 है। रावण राज्य में हैं सभी विकारी। इनका नाम ही है वेश्यालय। गंद में रहने वाले। रौरव नर्क है ना। इस समय के मनुष्य विषय वैतरणी नदी में पड़े हैं। मनुष्य जानवर पशुओं आदि सभी एक समान हैं मनुष्यों की कोई भी महिमा नहीं है। संन्यासी भी कहते हैं यह सर्प सर्पणी हैं। बरोबर है ना। अभी यह जो एक–दो को डंसते हैं यह डंसना छुड़ावे कौन? असुर से देवता कौन बनावे। दिखाते हैं असुरों और देवताओं की युद्ध लगी। देवताओं ने जीता। यह भी तुम अभी समझते हो असुरों को बाप आकर देवता बनाते हैं। इसमें लड़ाई आदि की तो बात ही नहीं। 5 विकारों पर जीत पहन तुम असुर से देवता पद पाते हो। बाकी सभी खत्म हो जाते हैं। देवताएँ सतयुग में रहते थे। अभी इस कलियुग में असुर रहते हैं। असुरी की निशानी क्या है? 5 विकार। देवताओं को कहा जाता है सम्पूर्ण निर्विकारी और असुरों को कहा जाता है सम्पूर्ण विकारी। वह है 16 कला सम्पूर्ण और वहां हैं नो कला। सभी की कला काया ही चट हो गई है। अभी बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं। बाप आते ही हैं पुरानी आसुरी दुनियाँ को चेंज करने। रावण राज्य वेश्यालय को शिवालय बनाते हैं। उन्होंने फिर नाम रख दिया है त्रिमूर्ति हाउस। त्रिमूर्ति रोड। आगे थोड़े ही यह नाम था। अभी होना क्या चाहिए। यह सारी दुनियाँ किसकी है? परमात्मा की है ना। परमात्मा की दुनियाँ है जो आधा कल्प पवित्र, आधा कल्प अपवित्र रहते हैं। क्रियेटर तो बाप को कहा जाता है। तो उनकी ही यह दुनियाँ हुई ना। बाप समझाते हैं मैं ही मालिक हूँ। मैं बीज रूप चैतन्य ज्ञान का सागर हूँ। मेरे में सारा ज्ञान है और कोई में नहीं। तुम समझ सकते हो इस सृष्टि के चक्र का नालेज बाबा में ही है। बाकी तो सभी हैं गपोड़े। मुख्य गपोड़ा बहुत खराब है। जिसके लिये बाप डोरापा देते हैं तुम मुझे ठिक्कर–भित्तर में, कुत्ते बिल्ले में, चण्डाल में समझ बैठे हो। तुम्हारी क्या दुर्दशा हो गई है। नई दुनियाँ के मनुष्यों में और पुरानी दुनियाँ के मनुष्यों में रात–दिन का फर्क है। आधा कल्प से लेकर अपवित्र मनुष्य पवित्र देवताओं को माथा टेकते आते हैं। यह भी बच्चों को पहले 2 पूजा होती है शिवबाबा की, जो शिवबाबा ही हमको पुजारी से पूज्य बनाते हैं। रावण तुमको पूज्य से पुजारी बनाती है, फिर बाप आकर ड्रामा प्लैन अनुसार (तु)मको पूज्य बनाते हैं। रावण आदि यह सभी नाम तो हैं ना। रावण बनाते हैं तो कितने मनुष्यों को बाहर से मंगाते हैं; परन्तु अर्थ कुछ नहीं समझते। बाहर से भी कितने को मंगाते हैं वह क्या समझेंगे। क्या तुम बन्दर सेना बनते हो। मनुष्य होकर फिर बन्दर बनते हो। राम ने बन्दरों की सेना ली, राम की सीता चुराई गई

क्या2 बातें बैठ बनाई हैं। देवताओं की कितनी निन्दा करते हैं। ऐसी बातें तो बिल्कुल हैं नहीं। जैसे कहते हैं ईश्वर नाम–रूप से न्यारा है अर्थात् है नहीं। वैसे यह जो कुछ भी खेल आदि बनाते हैं वह कुछ भी नहीं है। यह सभी है मनुष्यों की मत। मनुष्य मत को शैतानी, आसुरी मत कहा जाता है। यथा राजा रानी तथा प्रजा सभी ऐसे बन जाते हैं। उनको कहा ही जाता है डेविल राज्य। डेविल वर्ल्ड सभी एक–दो ... गाली देते रहते हैं। तो बाप समझाते हैं बच्चे, जब बैठते हो तो अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। तुम अज्ञान में थे तो परमात्मा को ऊपर में समझते थे। अभी तो जानते हो बाप यहां आया हुआ है। तो तुम ऊपर में नहीं समझते हो। तुमने बाप को यहां बुलाया है इस तन में। तुम जब अपने2 सेन्टर्स पर बैठते हो तो समझेंगे शिवबाबा मधुबन में इनके तन में है। भक्तिमार्ग में तो परमात्मा को ऊपर में मानते थे। हे! भगवान हे! परमात्मा पतित पावन कहते थे। अभी तुम बाप को याद करते हो, क्या बैठ करते हो। तुम जानते हो ब्रह्मा के तन में है तो जरूर यहां याद करना पड़ेगा। ऊपर में तो है नहीं। यहां आया हुआ है पुरुषोत्तम संगम युग पर। बाप कहते हैं तुमको इतना ऊँच बनाने मैं यहां आया हूँ। तुम बच्चे यहां याद करेंगे। तुम भल विलायत में होंगे तो भी कहेंगे ब्रह्मा के तन में शिवबाबा है। तन तो जरूर चाहिए ना। कहां भी तुम बैठे होंगे तो जरूर यहां याद करेंगे। ब्रह्मा के तन में ही याद करना पड़े। कई2 बुद्धिहीन ब्रह्मा को नहीं मानते हैं। शिवबाबा ऐसे नहीं कहते कि ब्रह्मा को याद न करो। ब्रह्मा बिगर शिवबाबा कैसे याद पड़ेगा। बाप कहते हैं मैं इस तन में हूँ। इसमें मुझे याद करो। इसलिए तुम बाप और दादा दोनों को याद करते हो। बुद्धि में यह ज्ञान है इनको अपनी आत्मा है। वह अपने सिरे हैं। उनको तो अपना शरीर है नहीं। बाप ने कहा है मैं इस प्रकृति का आधार लेता हूँ। बाप बैठ सारी ब्रह्माण्ड और सृष्टि के आदि–मध्य–अन्त का राज़ समझाते हैं और कोई ब्रह्माण्ड को जानते ही नहीं। ब्रह्म जिसमें हम और तुम अण्डे रहते हैं। हम हैं सुप्रीम अण्डा। सुप्रीम अथवा नॉनसुप्रीम रहने वाले सभी उस ब्रह्मलोक शान्तिधाम के हैं। शान्तिधाम बहुत मीठा नाम है। यह सभी बातें तुम्हारी बुद्धि में हैं। हम असल के रहवासी ब्रह्ममहतत्व के हैं जिसको निर्वाणधाम, वानप्रस्थ कहा जाता है। यह बातें अभी तुम्हारी बुद्धि में हैं। जब भक्ति है तो ज्ञान का अक्षर नहीं इनको कहा जाता है पुरूषोत्तम संगम, जबकि चेंज होती है। पुरानी दुनियाँ में असुर रहते हैं तो उनको चेंज करने लिये बाप को आना पड़ता है। सतयुग में तुमको कुछ भी पता नहीं रहेगा। अभी तुम कलियुग में हो तो भी कुछ पता नहीं है। जब नई दुनियाँ होगी तो भी इस पुरानी दुनियाँ में हो तो नई दुनियाँ का मालूम नहीं है। नई दुनिया कब थी, पता नहीं। वह तो लाखों वर्ष कह देते हैं। तुम बच्चे जानते हो बाप इस संगमयुग पर ही कल्प कल्प आते हैं। आकर इस विराट झाड़ का राज़ समझाते हैं और यह चक्र कैसे फिरता है, वह भी तुम बच्चों को समझाते हैं। तुम्हारा धंधा ही है यह समझाने का। अभी एक एक को समझाने से तो बहुत टाइम लग जाये इसलिए अभी तुम बहुतों को समझाते हो। बहुत समझते रहते हैं। यह मीठी–2 बातें फिर बहुतों को समझानी हैं। तुम प्रदर्शनी आदि में भी समझाते हो ना अभी शिव जयन्ती पर और ही अच्छी रीति बहुतों को बताकर समझाना है यह सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है, इसकी आयु कितनी है। खेल की ड्युरेशन कितनी है। तुम तो एक्युरेट बतावेंगे ना। तुमको बाप समझाते हैं ना जिससे तुम देवता बन जाते हो। जैसे तुम समझकर देवता बनते हो वैसे औरों को भी बताते हो, बाप ने हमको यह समझाया है हम किसकी ग्लानी आदि नहीं करते हैं। हम बताते हैं भक्ति को दुर्गति मार्ग, ज्ञान को सद्गति मार्ग कहा जाता है। अनेक कलियुगी गुरू सभी हैं डुबोने वाले। एक ही सद्गुरु है पार करने वाला। ऐसे2 मुख्य प्वाइंट निकाल कर समझाओ। भक्ति है अनराइटियस। ज्ञान है राइटियस। अनराइटियस मनुष्य राइटियस देवताओं के आगे माथा टेकते हैं। राइटियस अर्थात् उनको नालेज है। नालेजफुल बाप द्वारा उन्हों को नालेज मिली जिससे यह पद पाया। ऐसी2 प्वाइंट्स निकालनी हैं। जो रांग रास्ते पर हैं उन्हों को राइटियस बातें सुनाते जाओ। भक्ति मार्ग अनराइटियस मार्ग है। ज्ञान मार्ग है राइटियस मार्ग। ज्ञान सागर बाप ही आकर ज्ञान सुनाते हैं।

ज्ञान सुनाकर सद्गति कर देते हैं। फिर आधा कल्प दुर्गति होती ही नहीं जो ज्ञान की दरकार हो। बाप जब आये तब आकर दुनिया को बदली करे ना। तो रावण माया हेल (नर्क) बनाती है। बाप आकर स्वर्ग बनाते हैं। हेल और हेविन दुःख और सुख है। यह सारा ज्ञान सिवाय बाप के कोई दे नहीं सकता। मनुष्य में ज्ञान होता ही नहीं। देवताओं में भी ये ज्ञान होता नहीं। बाप आते ही हैं संगम पर। बाकी वह है ज्ञान की प्रारब्ध। ज्ञान से है दुःख का प्रारब्ध। ऐसी2 बातों पर विचार–सागर–मंथन करो तो बहुत प्वाइंट्स निकलेंगी। जगदीश बच्चा मैग्ज़िन लिखता है यह भी मेहनत है ना। इसमें बड़ी एकान्त चाहिए। एकान्त में विचार सागर मंथन होता है। इसमें बड़ी कान्ट्रेक्ट बुद्धि चाहिए। एकान्त का टाइम भी अमृतवेले का अच्छा होता है। शुभ मुहूर्त है ना। बाप भी तुमको इस समय में ही सुनाते हैं। भक्ति भी मनुष्य सवेरे करते हैं। इसलिये गायन है राम सिमर प्रभात ..... आत्मा कहती है हे मोरे मन राम सिमर प्रभात को। आत्मा ही बात करती है हे! मोरे मन। हे! मेरे शरीर, ऐसे कब सुना? तो इसमें एकान्त अच्छी चाहिए। एकान्त में चक्र लगावे तो भी याद अच्छी रहेगी। सवेरे के टाइम डर नहीं रहता है। गुंडों का डर रात को रहता है। बाप भी सवेरे बच्चों को बैठ समझाते हैं। बाप के सामने भी ज्ञान डांस के शौकिन चाहिए। जो सीख कर औरों को सिखलावें। ज्ञान मुरली को ही ज्ञान डांस कहा जाता है। इसके लिये ही गायन है मुरली तेरी में है जादू.... खुदा आकर मुरली चलाते हैं ना। ऊपर में बैठ मुरली कैसे चलावेंगे। अभी तुम जानते हो शिवबाबा मधुबन में ब्रह्मा के तन में मुरली चलाते हैं। ड्रिल सिखलाते हैं। वास्तव में सभी जगह टाइम एक ही होना चाहिए। जबकि बाप बैठ बैटरी भरने ड्रिल सिखलाते हैं। कहते हैं ना मिठरा घुरत घुराये। बाप भी सर्विसएबुल बच्चों को याद करते हैं। सिद्ध कर दिखाते हैं तुमको हम सभी से जास्ती याद करते हैं। रोज मुरली में याद प्यार देते हैं। जास्ती प्यार किसका मिलता है? बाप का। बाप जानते हैं सारे कल्प में एक ही बारी बच्चों को प्यार देने, ज्ञान देने जाते हैं और बहुत मीठा बनाते हैं। तो तुम बच्चे भी प्यारे बनो। बाप से सीखो। कोई बहुत मीठे लगते हैं, कोई जैसे .... होते हैं। सन्यासी भी कहते हैं ना खूबसूरत बला है। इसलिए भागते हैं, फिर खुद तमोप्रधान बनते हैं। खुद ही सर्प बला बन जाते हैं। कहां आगे के सतोप्रधान सन्यासी कहां अभी के तमोप्रधान। पहले थे सर्प, फिर वैराग्य आया फिर आकर सर्प, बलाएं बनते हैं। बाबा के पास लिखते हैं बाबा गुरू से हमको यह हुआ। तमोप्रधान है ना। अभी शिवजयन्ती आती है तो मनुष्यों को बाप का परिचय देने भभका करते हैं। बाबा ने जो हमको समझाया है वह हम आप को समझाते हैं। बाबा बाबा अक्षर कब भूलो नहीं। पहले2 बाप का चित्र दिखाओ। बाबा हमको यह सिखलाते हैं ब्रह्मा द्वारा। तुम यह चित्र आदि बनाते हो मनुष्यों को समझाने लिये। 84 के चक्र की भी समझानी है। प्वाइंट्स तो बहुत ही हैं। जो तुमको बाप ने समझाया है फिर औरों को समझाना है। भारत को कैसे हम रामराज्य बना रहे हैं। इसमें लड़ाई आदि की कोई बात ही नहीं है। देवताएं होते ही हैं अहिंसक। हिंसक को बाप अहिंसक बनाते हैं। तो ऐसे2 समझाना है। शिवजयन्ती वर्ष वर्ष मनाते हैं। तुम लिखते हो 33वीं शिव जयन्ती तो कोई की बुद्धि में आता थोड़े ही है। क्या शिवबाबा को कोई इतने वर्ष हुये हैं जो 33वीं शिव जयन्ती मनाते हैं। पूरे उल्लू लोग हैं। नहीं तो पूछना चाहिए ना ऐसे क्यों लिखते हो? शिव जयन्ती मनाते हो ना। तुम वर्ष2 मनाते हो। अभी कहेंगे 33वीं शिवजयन्ती मनाते हैं। जरूर शिवबाबा आया होगा, कुछ तो रहा होगा, ना कि चला गया होगा। कितना वर्ष हुआ है। कोई पूछते नहीं है शिवबाबा कहां है जो तुम 33वीं शिव जयन्ती मनाते हो। अपने ही गोरख धंधे में हैं। समझाना है हम 33 वीं शिव जयन्ती मनाते हैं। तो जरूर शिवबाबा यहां है ना। बड़ा2 बोर्ड लगाना चाहिए। जिस पर लिखना है 33वीं शिव जयन्ती। निमंत्रण में भी लिखो। अच्छा, रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का यादप्यार, गुडमॉर्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप की नमस्ते।